प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री रमेश हिंदुराव ढेरे ने मेरे निर्देशन में " डॉ. रामदरश मिश्र की कहानियों का सामाजिक यथार्थ " शीर्षक लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्.की उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही है। मैं संपूर्ण लघु शोध-प्रबन्ध को आद्योपान्त पढ़कर ही यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

सुनीलकुमार

कोल्हापुर।
३० दिसम्बर, १९९० ।

(डॉ.सुनीलकुमार लवटे)
शोध निर्देशक

..

प्र मा ण पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी के निर्देशन में डॉ.रामदरश मिश्र की कहानियोंका सामाजिक यथार्थ शीर्षक लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबन्ध में प्रस्तुत किये गये हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही है।

कोल्हापुर।
३० दिसम्बर, १९९०।

(श्री.रमेश हिंदुराव ढेरे)
शोध-छात्र

••

भू मि का

आधुनिक युग में कहानी सबसे अधिक लोकप्रिय और महत्वपूर्ण साहित्य-विधा है। हिन्दी कहानी को इस चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने के लिए प्रेमचंद, प्रसाद, जैनेन्द्र, यशपाल जैसे सशक्त कहानीकारों ने अपना-अपना योग दिया है। समय-समय पर अन्य प्रमुख कहानी कारों ने अपने योगदान से हिन्दी कथा को ऋणी बनाया है। आज हिन्दी कहानी के क्षेत्र में हर दिन नये-नये कहानीकार अवतरित हो रहे हैं। ऐसे कहानीकारों में डॉ.रामदरश मिश्र एक है। मिश्र जी ने सन् १९५० के आसपास हिन्दी कहानी क्षेत्र में प्रवेश किया। इसके पूर्व मिश्र जी एक सफल कवि और उपन्यासकार के रुप में पहचाने जाते थे। मिश्र जी का व्यक्तित्व बहुमुखी है। कवि, उपन्यासकार, आलोचक, संपादक, आदि रुपों में भी वे चर्चित रहे हैं।

आंदोलनों के बाहर रहकर जिन कहानीकारों ने हिन्दी कहानी साहित्य के विकास में योग दिया, उसमें डॉ.रामदरश मिश्र प्रमुख कहानीकार है। उनकी कहानियों में चित्रित बहुमुखी सामाजिक यथार्थ से मैं प्रभावित हो गया। डॉ.रामदरश मिश्र के कहानी साहित्य पर मेरी दृष्टि से अब तक कोई महत्वपूर्ण शोध-कार्य नहीं हुआ है। कहानीकार मिश्र जी पर अबतक डॉ.विवेकीराय और डॉ.वेदप्रकाश अमिताभ के दो अपवादात्मक समीक्षात्मक लेखों को छोड़कर कोई महत्वपूर्ण समीक्षा नहीं हुई है। प्रस्तुत डॉ.रामदरश मिश्र की कहानियों का सामाजिक यथार्थ शीर्षक लघु शोध-प्रबन्ध इस कमी की पूर्ति में किया गया एक विनम्र प्रयास है। एक दृष्टि से मेरा यह लघु शोध-प्रबन्ध एक उपेक्षित एवं सर्वथा अस्पर्श कथाकार की कला का मूल्यांकन करने की प्रामाणिक कोशिश है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में मिश्र जी की जीवनी, उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू तथा उनके कृतित्व के संबंध में परिचय दिया गया है। जीवनी के अंतर्गत मिश्र जी का जन्म, बचपन, शिक्षा, जीविका, साहित्य सृजन आदि बातों को स्पष्ट किया है। किसी रचना कार की लेखन प्रक्रिया एवं दर्शन को भूमिका में जानने के लिए ऐसे अध्ययन की आवश्यकता रहा करती है ऐसी मेरी विनम्र धारणा है।

द्वितीय अध्याय में मिश्र जी की कहानियों का विकासात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत उनके कहानी लेखन का प्रारंभ और प्रेरणा स्त्रोत आदि बातें स्पष्ट की गयी है। रचना काल की दृष्टि से उनकी कहानियों को सन् १९६० के पूर्व की कहानी, साठोत्तरी कहानी, वर्तमान कहानियों के रूप में विभाजित कर उनकी कहानियों की भाषा, शैली, उद्देश्य, विषय की दृष्टि से कहानियों का क्रमिक विकास स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। इस विकासात्मक मूल्यांकन में जो तथ्य हाथ आये उसकी चिकित्सा अंतिम अध्याय में की गई है।

तृतीय अध्याय में उनकी कहानियों में प्रतिबिंबित यथार्थ को रेखांकित किया है। इस यथार्थ के बदलते काल सदृश्य रूप को अंकित करने के हेतु से उसे आरंभिक, साठोत्तरी जैसे विभागों में विभाजित किया है। साठोत्तरी कहानियों में चित्रित यथार्थ के मूल्यांकन की दृष्टि से उसे आठवें और नौवें दशक की पृष्ठभूमि में अलग रूप से विश्लेषित किया है। इस अध्याय से उनकी कहानी के स्वरूप की पहचान आसान हुई है।

चतुर्थ अध्याय में मिश्र जी की कहानियों में चित्रित यथार्थ का सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में अध्ययन किया है। इसके अंतर्गत यथार्थ चित्रण की लेखकीय भूमिका, यथार्थ चित्रण का लेखकीय लक्ष्य, यथार्थ चित्रण और सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा, उनकी वर्तमान कहानियों का सामाजिक यथार्थ आदि बातों का मूल्यांकन किया है। एक रचनाशील कथाकार की निरंतर विकसित एवं गतिशील रचना प्रक्रिया के वर्तमान रूप की परख का यह प्रयास उसके विकास की संभावनाओं का पता लगाने के लिए अनिवार्य था।

पाँचवें अध्याय में हिन्दी कहानी में सामाजिक यथार्थ चित्रण की परंपरा को स्पष्ट करते हुए उनकी पृष्ठभूमि में डॉ.रामदरश मिश्र की कहानियों के स्वरुप को चित्रित किया है। ऐसा करते समय उनके समकालीन और पूर्ववर्ती कहानीकारों में होने वाले फर्क को रेखांकित किया है। हिन्दी की सामाजिक यथार्थवादी कहानी के विकास में डॉ.रामदरश मिश्र जी के योगदान को भी स्पष्ट किया गया है। इससे हम जान्ते है कि रामदरश एक ऐसे कथाकार है जो हिन्दी कहानी को अपने चिरन्तन अवदान से निरंतर समृद्ध बनाते रहे है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का निखरा हुआ और स्पष्ट रुप डॉ.सुनीलकुमार लवटे जी के निर्देशन का प्रमाण है। उनके निर्देशन के लिए मैं उनका ऋणी हूँ। मेरे अन्य अध्यापक एवं निर्देशक डॉ.बी.बी.पाटील तथा डॉ.सो.एस.पी. जैन का भी मैं आभारी हूँ।

बे.खर्डेकर ग्रंथालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर और महावीर महाविद्यालय, कोल्हापुर आदि संस्थाओं ने सामग्री संकलन और संदर्भ आदि के संबंध में काफी सहायता की। इसके लिए मैं श्री.एस.एन.जाधवसाहेब और श्री.एस.पी.रसाळ का आभारी हूँ। जिनकी प्रेरणा और सहायता से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध पूर्ण हुआ वे हैं मेरे परमपूज्य माता-पिताजी। इनके ऋण में ही रहना मैं पसंद करूँगा। इस लघु शोध-प्रबन्ध के दौरान कु.रफाकत शेख ने जो सहयोग दिया उसके लिए मैं उनका आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध का टंकलेखन श्री बाळकृष्ण रा.सावंत (कोल्हापुर) ने किया मैं उनका आभारी हूँ।

कोल्हापुर।

दिसम्बर : ३० : १२ : १९९०।

श्री रमेश हिंदुराव ढेरे

••

अनुक्रमणिका

:- डॉ.रामदरश मिश्र की कहानियों का सामाजिक यथार्थ :--

प्रथम अध्याय

पृष्ठभूमि — पृष्ठ संख्या

अ) जीवनी - 1 — 16

१) जन्म एवं बचपन

२) शिक्षा

३) जीविका

४) साहित्य सृजन

ब) व्यक्तित्व -

१) कवि

२) कहानीकार

३) अध्यापक

४) उपन्यासकार

५) संपादक

६) समीक्षक

निष्कर्ष ---

द्वितीय अध्याय

:- मिश्र जी की कहानियों का विकासात्मक अध्ययन -: 17-50

अ) मिश्रजी की सन् १९६० के पूर्व की कहानी

ब) सातवें दशक की कहानी

क) आठवें दशक की कहानी

ड) नौवें दशक की कहानी

निष्कर्ष --

तृतीय अध्याय

डॉ. रामदरश मिश्र की कहानियों का सामाजिक यथार्थ -- 51 - 88

१) सन् १९६० के पूर्व की कहानियों का सामाजिक यथार्थ --

१) ग्राम जीवन का चित्रण

२) प्रकृति के रंग-गंध

३) गरीबी और पीड़ा

४) अंध विश्वास

२) साठोत्तरी कहानियों का सामाजिक यथार्थ (सातवाँ दशक)

१) प्राकृतिक प्रकोप

२) बदलते मूल्य

३) बदलते संबंध

४) टूटती इन्सानियत

५) अकेलेपन का अहसास

६) शिक्षा-क्षेत्र का बदलता स्वरूप

७) नारी समस्या

३) आठवें दशक की कहानियों का सामाजिक यथार्थ --

१) भ्रष्टाचार और कालाबाजारी

२) राजनीतिपर चोंट

३) आम आदमी की जिंदगी की विडंबना

४) सामूहिक संघर्ष की भावना

५) हरिजन वर्ग के दर्द-अभाव

६) महानगरीय जन-जीवन-खोखली चकाचौंध

४) नववें दशक की कहानियों का सामाजिक यथार्थ -

१) अन्याय - अत्याचार -

२) छुआ-छूत की समस्या

३) नारी समस्या

निष्कर्ष --

पृष्ठ संख्या

चतुर्थ अध्याय

कहानियों में चित्रित यथार्थ : परिवर्तन के संदर्भ में 89-96

१) यथार्थ चित्रण की लेखकीय भूमिका

२) यथार्थ चित्रण का लेखकीय लक्ष्य

३) यथार्थ चित्रण और सामाजिक परिवर्तन की अपेक्षा

४) उनकी वर्तमान कहानियों का यथार्थ --

१) नारी समस्या

२) बाढ़ग्रस्त जिंदगी - देहाती असुविधाएँ

निष्कर्ष --

पंचम अध्याय

डॉ.रामदरश मिश्र और हिन्दी कहानी --- 97 - 106

१) हिन्दी कहानी में सामाजिक यथार्थ चित्रण की परंपरा

२) पूर्ववर्ती एवं समकालीन कथाकार और रामदरश मिश्र

१) पूर्ववर्ती कथाकार और रामदरश मिश्र

२) समकालीन कथाकार और रामदरश मिश्र

३) हिन्दी सामाजिक यथार्थवादी कहानी के विकास में डॉ. रामदरश मिश्र का योगदान।

—

-: परिशिष्ट :-

१] डॉ. रामदरश मिश्र की साहित्य संपदा 107 पृष्ठ संख्या 108

२] डॉ. रामदरश मिश्र का संपादित साहित्य 109

३] संदर्भ ग्रन्थ सूचि 110 - 112

४] पत्र-पत्रिकाएँ। 113